हिंदी पखवाड़ा – 2026 का उद्घाटन समारोह

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई में दिनांक 16 सितंबर 2026 को हिंदी पखवाड़ा – 2026 का शुभारंभ समारोह संस्थान के निदेशक डॉ. एन.पी. साहू की अध्यक्षता में आयोजित किया गया, जिसमें प्रसिद्ध अभिनेत्री, लेखिका, संगीतकार, गायिका एवं एंकर श्रीमती कामिनी खन्ना जी मुख्य अतिथि थीं। इस अवसर पर संयुक्त निदेशक डॉ. केदार नाथ मोहंता, संक्युक्त निदेशक (प्रशासन) श्री राजीव लाल भी मौजूद थे।

मुख्य अतिथि ने कहा कि हिंदी भारत की अपनी भाषा है, फिर भी इसके प्रचार-प्रसार के लिए हमें हिदी दिवस, सप्ताह, पखवाड़ा आदि मनाना पड़ता है, जो अत्यंत दुखद है। इसका मुख्य कारण है हमारी अंग्रेज़ियत की मानसिकता। अब अंग्रेज़ी हमारे खून में घुल गई है अंग्रेज़ी। बच्चों को एक भाषा के तौर पर या एक कौशल के तौर पर अंग्रेज़ी सिखाएँ, लेकिन हिंदी को अवश्य महत्व दें। बच्चों को हिंदी में बोलने के लिए प्रेरित करें। हिंदी बहुत ही सरल, सहज एवं सुंदर भाषा है। अपनी भाषा से बिछुड़ना अपनी संस्कृति से बिछुड़ना होता है, अपनी जड़ों से बिछुड़ना होता है। इसलिए आप सभी से निवेदन करता हूँ कि हिंदी को दिल से अपनाएँ और इसके प्रचार-प्रसार में महती भूमिका निभाएँ।

निदेशक डॉ. एन.पी. साहू ने कहा कि भाषा हमारी सोच और संस्कृति से जुड़ी है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए भारत सरकार निरंतर प्रयास कर रही है। साथ में हमें भी इसके लिए अपना योगदान देना होगा। वर्ष 2047 तक के विकसित भारत की सपने को साकार करने में हिंदी भाषा के योगदान को सुनिश्चित किया जाना चाहिए और इसके लिए लक्ष्य भी निर्धारित किया जाना चाहिए और समय-समय पर इसका आकलन किया जाना चाहिए। भाषा से संबंधित कई रिपोर्टों के अनुसार बोलने वालों की संख्या के आधार पर हिंदी विश्व में तीसरे स्थान पर है। प्रथम भाषा के रूप में देखा जाए तो हिंदी और अंग्रेज़ी बोलने वालों की संख्या में ज़्यादा अंतर नहीं है, लेकिन द्वितीय भाषा के रूप में देखा जाए तो यह अंतर काफ़ी है। इस अंतर को दूर किया जाना चाहिए। हिंदी भारत की सभी भाषाओं को आपस में जोड़ने वाली कड़ी है। इसी को आगे बढ़ाते हुए भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने हिंदी की शब्द-संपदा बढ़ाने के लिए भारत की अन्य भाषाओं से भी श्ब्द ग्रहण करते हुए 'शब्द सिंधु' नामक कोश बनाया है, जो भारत की विभिन्न मातृभाषाओं के साथ हिंदी को जोड़ने का कार्य किया है। हिंदी को दूसरी भाषाओं के साथ जोड़ने से इसका स्वत: विकास होगा। हमें अधिकाधिक भाषाएँ सीखने की कोशिश करनी चाहिए। जितनी ज़्यादा भाषाएँ सीखेंगे, उतने ज़्यादा समाज से हम संप्रेषण कर पाएँगे। हमें हिंदी को व्यवसाय और रोज़गार के साथ जोड़ते हुए इसकी उपयोगिता बढ़ानी चाहिए। हिंदी पखवाड़े की सफलता तब मालूम पड़ेगी, जब इसके प्रभाव का आकलन किया जाएगा। इसलिए कार्यालयीन कार्य में कितनी प्रगति हुई है,

इसका आकलन हमें करना चाहिए। मैं सभी से आग्रह करता हूँ कि केवल हिंदी पखवाड़े के दौरान ही नहीं, बल्कि वर्ष भर हिंदी में अधिकाधिक कार्य करें और सही मायने में हिंदी को राजभाषा के पद पर चिरस्थाई बनाने के लिए योगदान दें।

डॉ. केंदार नाथ मोहंता ने कहा कि अन्य हिंदीतर भाषियों को हिंदी सीखना आसान है, क्योंकि हिंदी में अधिकांश शब्द संस्कृत से आए हैं। हिंदीतर भाषी क्षेत्रों की भाषाओं में भी संस्कृत शब्दों का भण्डार है। रुचि लेकर हिंदी सीखें और हिंदी में अधिकाधिक कार्य करें ताकि हम राजभाषा के लिए निर्धारित लक्ष्य से पीछे न रहें। मैं वैज्ञानिकों से आग्रह करता हूँ कि हिंदी में प्रकाशन निकालें और में संगोष्ठी आयोजित करें।

श्री राजीव लाल ने कहा कि भारत में लगभग 100 करोड़ लोग हिंदी जानते है। नेपाल, मौरीशस जैसे देशों में हिंदी बहुत अधिक प्रचलित है। फिजी की राजभाषा हिंदी है। विश्व के 176 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। इन सबके बावजूद हिंदी का जितना प्रचार-प्रसार होना था, उतना नहीं हुआ है। 1949 को संविधान सभा ने हिंदी राजभाषा का दर्जा दिया था, लेकिन 1965 तक शासन के लिए द्विभाषी व्यवस्था का प्रावधान किया गया। मुझे लगता है कि हिंदी के विकास के लिए सही नहीं था। हिंदी वास्तव में हमारी संस्कृति का वाहक है। इसलिए सभी से आग्रह करता हूँ कि अपने दैनंदिन कामकाज में राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करें और अपनी भाषा एवं संस्कृति को सम्मान दें। संस्थान हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं में बढ़ चढ़कर भाग लें।

इससे पूर्व वंदेमातरम का सामूहिक गायन, श्रीमती स्मिता कोली की सरस्वती वंदना और अतिथियों के करकमलों से दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ । श्री आशीष चौबे, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने केंद्रीय कृषि मंत्री के संदेश और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक का अपील पढ़ा। श्री जगदीशन ए.के., संयुक्त निदेशक (राजभाषा) ने अतिथियों का स्वागत किया और श्रीमती रेखा नायर, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने आभार प्रकट किया। उद्घाटन समारोह के दौरान अतिथियों के कर-कमलों से 'कार्यालयीन टिप्पणियाँ' नामक पुस्तक का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर संस्थान की सोशल मीडिया को प्रभावी तरीके से संभालने वाले छात्रों का सम्मान भी किया गया। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पारोमिता बैनर्जी सावंत ने पूरे कार्यक्रम का संचालन किया ।

INAUGURAL CEREMONY OF HINDI FORTNIGHT – 2026

The inaugural ceremony of 'Hindi Fortnight – 2026' was held on September 16, 2026, at the ICAR-Central Institute of Fisheries Education (CIFE), Mumbai, under the chairmanship of the Institute's Director, Dr. N.P. Sahu. Renowned actress, author, composer, singer, and anchor Smt. Kamini Khanna graced the occasion as the chief guest. Joint Director Dr. Kedar Nath Mohanta and Joint Director (Administration) Shri Rajiv Lal were also present.

The chief guest remarked that although Hindi is India's own language, it is deeply unfortunate that we still need to observe Hindi Diwas, Hindi Week, and Hindi Fortnight to promote it. The primary reason for this is our 'Anglicized' mindset; English has become deeply ingrained in our system. Children should certainly be taught English as a language or a skill, but Hindi must be given due importance. Encourage children to speak in Hindi; it is a very simple and beautiful language. Separation from our language means separation from own culture and roots. Therefore, I urge everyone to embrace Hindi wholeheartedly and play a significant role in its promotion.

Director Dr. N.P. Sahu stated that language is intrinsically linked to our thought process and culture. The Government of India is making continuous efforts to promote Hindi as the Official Language, and we, too, must contribute to this endeavor. We need to define the role of the Hindi language in realizing the vision of a 'Developed India' by 2047, set specific targets, and periodically assess our progress. According to various reports, Hindi ranks third globally in terms of the number of speakers. While there is little difference in the number of native speakers (first language) between Hindi and English, a significant gap exists regarding those who speak it as a second language. This gap should be bridged. Hindi serves as the link language in India. To enrich Hindi's vocabulary, the Department of Official Language, Government of India, has created a lexicon named 'Shabd Sindhu' by incorporating words from other Indian languages, thereby linking Hindi with the country's various mother tongues. Integrating Hindi with other languages will foster its natural evolution. We should try to learn as many languages as possible; the more languages we learn, the better we can communicate with diverse communities. We must enhance the utility of Hindi by linking it with business and employment opportunities. The success of 'Hindi Fortnight' can only be gauged by assessing its impact; therefore, we must evaluate the progress made in official work during this period. I urge everyone to do as much work as possible in Hindi - not just during 'Hindi Fortnight' but throughout the year - and contribute to firmly establishing Hindi in its role as the Official Language.

Dr. Kendar Nath Mohanta remarked that it is not tough for non-Hindi speakers to learn the language because most of the Hindi words are derived from Sanskrit, and the languages of non-Hindi regions also possess a vast repository of Sanskrit words. One

should learn Hindi with genuine interest and use it extensively in work so that we do not fall short of the goals set for the Official Language. I urge scientists to publish their work and organize seminars in Hindi.

Shri Rajiv Lal noted that approximately one billion people in India know Hindi. The language is widely spoken in countries like Nepal and Mauritius, and it holds the status of an Official Language in Fiji. Hindi is taught in 176 universities across the world. Despite this, the language has not been propagated or promoted to the extent it should have been. Although the Constituent Assembly granted Hindi the status of Official Language in 1949, a bilingual system for administration was mandated until 1965; I believe this was not conducive to the development of Hindi. Hindi is, in fact, a carrier of our culture. Therefore, I urge everyone to make maximum use of the Official Language Hindi in their daily work and to give the due honor to it and our culture. I also encourage you to participate enthusiastically in the competitions organized during the 'Hindi Fortnight'.

At the outset, the programme commenced with the collective singing of 'Vande Mataram'; 'Saraswati Vandana' by Smt. Smita Koli, and the lighting of the ceremonial lamp by the distinguished guests. Shri Ashish Chaubey, Senior Administrative Officer, read out the message from the Union Minister of Agriculture and the appeal from the Director General of the Indian Council of Agricultural Research. Shri Jagadeeshan A.K., Joint Director (Official Language), welcomed the guests, while Smt. Rekha Nair, Chief Technical Officer, proposed the vote of thanks. During the inaugural ceremony, a book entitled 'Karyalayeen Tippaniyan' was also released by the guests. On this occasion, students who effectively managed the institute's social media were also felicitated. Principal Scientist Dr. Paromita Banerjee Sawant compeered the entire program.

हिन्दी पखवाड़े के उद्घाटन समारोह की झलकियाँ

हिन्दी पखवाड़ा-2026
ICAR-CIFE
Mumbai

हिन्दी पखवाड़ा-2026
ICAR-CIFE

हिन्दी पखवाड़ा-2026
ICAR-CIFE
Mumbai

हिन्दी पखवाड़ा-2026
ICAR-CIFE

हिन्दी पखवाड़ा-2026
ICAR-CIFE

ICAR-CIFE